अंक 268 वर्ष 56

भाषा

सितंबर–अक्तूबर 2016

अभिनवगुप्त और भारतीय साहित्य विशेषांक

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

ISSN 0523-1418
भाषा (द्वैमासिक)
वर्ष : 56 □ अंक : 1 (268)
सितंबर–अक्तूबर, 2016

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.hindinideshalaya.nic.in

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110054
सदस्यता हेतु ड्राफ्ट नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली के पक्ष में भेजें।

मूल्य :			
स्वदेश में : एक प्रति	:	₹ 25/–	(डाकखर्च अतिरिक्त : ₹ 11/–)
वार्षिक	:	₹ 125/–	(डाकखर्च अतिरिक्त : ₹ 66/–)
विदेश में : एक प्रति	:	£ 1 अथवा $ 2	(डाकखर्च सहित)
वार्षिक	:	£ 6 अथवा $ 12	(डाकखर्च सहित)

वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेल : pub.dep@nic.in
दूरभाष : 011-23817823/ 9689
फैक्स : 011-23817846

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे भारत सरकार या संपादन मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

31/2/16

4342 CHD/16— 1B

अनुक्रमणिका

संपादकीय

आपने लिखा

आलेख

1.	अभिनवगुप्त तथा भारतीय वाङ्मय को उनका योगदान	डॉ. दयाल सिंह पवार	9
2.	सहस्राब्दि पर आचार्य अभिनवगुप्त	डॉ. उदय प्रताप सिंह	21
3.	अभिनवगुप्त की साहित्यिक निष्पत्ति	आचार्य मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी	31
4.	त्रिकशास्त्र के व्याख्याता आचार्य अभिनवगुप्त	डॉ. मोहन लाल सर	46
5.	अभिनवगुप्त और उनका तत्व-चिंतन	प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल	51
6.	अभिनवगुप्त का ध्वनि-चिंतन	डॉ. आशा रानी	59
7.	अभिनवगुप्त का रस-विमर्श	डॉ. सुनीता रानी घोष	75
8.	रस-निष्पत्ति और अभिनवगुप्त	डॉ. अनुशब्द	91
9.	अभिनवगुप्त की दृष्टि में रस एवं शिवतत्व	डॉ. दया शंकर तिवारी	101
10.	अभिनवगुप्त का शास्त्र-लालित्य	डॉ. अजय कुमार मिश्र	108
11.	व्याकरणिक कोटियों का अभिनवकृत दार्शनिक उपयोग	डॉ. बलराम शुक्ल	121
12.	अभिनवगुप्त का शब्द-चिंतन	डॉ. आरती दुबे	135
13.	अभिनवगुप्त की लोचनटीका का अवेक्षण	प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी	140
14.	आचार्य अभिनवगुप्त : एक अनुशीलन	डॉ. शुभंकर मिश्र	147
15.	आचार्य अभिनवगुप्त का दार्शनिक-चिंतन	डॉ. दीनानाथ शुक्ल	156

31/2/16

रस-निष्पत्ति और अभिनवगुप्त

डॉ. अनुशब्द

अमेरिकी कवि फॉस्ट ने लिखा है कि कोई भी कविता अपने समय से पूर्व लिखी गई सारी कविताओं के प्रकाश में लिखी जाती है। यह बात केवल कविता के संदर्भ में ही सही नहीं है, बल्कि आलोचना के संदर्भ में भी सटीक है। चाहे आधुनिक समीक्षा हो या प्राचीन, दोनों समीक्षाओं के लिए यह बात मायने रखती है। फॉस्ट का यह कथन भारतीय नाट्य-चिंतन की नजर में भी महत्वपूर्ण है। हमारे यहाँ नाट्यालोचन की परंपरा पूर्वपक्ष की उपस्थिति और उत्तरपक्ष के उपस्थापन में अपनी सिद्धि मानती रही है। अभिनवगुप्त की 'अभिनवभारती' और 'ध्वन्यालोकलोचन' इस तथ्य के सबल प्रमाण हैं। ये दोनों कृतियाँ क्रमशः नाट्यशास्त्र का और ध्वन्यालोक का भाष्य होते हुए भी काव्य चिंतन-जगत में स्वतंत्र ग्रंथ का दर्जा प्राप्त कर चुकी हैं और संदर्भ-ग्रंथ के रूप में आज भी समादृत हैं। आज जब शोध ग्रंथ के नाम पर तथ्यों का संकलन और संपादन मात्र हो रहा है, वैसी स्थिति में अभिनवगुप्त के इन दोनों ग्रंथों की महिमा और गरिमा आलोचना-जगत के लिए प्रेरणास्पद है।

रस-निष्पत्ति रस-प्रकरण का महत्वपूर्ण पक्ष है। अधिकांश आचार्यों ने इसे केंद्रीयता प्रदान की है। स्वयं भरत ने अपने रस-प्रसंग का प्रारंभ रस-स्वरूप के विवेचन से नहीं, रस-निष्पत्ति से ही किया है। इसलिए यह आचार्यों के लिए शास्त्रार्थ का विषय रहा है। भरत ने रसनिष्पत्ति का जो सूत्र प्रस्तुत किया है, वह अत्यंत संक्षिप्त और अपरिभाषित है। जिस प्रकार पाश्चात्य आचार्यों के लिये अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत चुनौती रहा है, उसी प्रकार रस-निष्पत्ति भारतीयों के लिए वाद-विवाद और संवाद का प्रमुख प्रस्थान-बिंदु रहा